Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2026, E-Journal, Vol. I, Issue LIII (53), ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

# भारतीय ज्ञान परंपरा में भौगोलिक तत्व विवेचन

**डॉ. प्रभाकर मिश्र***

* प्राध्यापक (भूगोल) शासकीय महाविद्यालय, महिदपुर(म.प्र.) भारत

**शोध सारांश –** सृष्टि के उदय के साथ ही निरंतर परिवर्तन की श्रृंखला चली आ रही है जिसमें अनेक भौतिक परिवर्तन सम्मिलित हैं। सृष्टि में भौतिक पदार्थों के माधयम से अनेक खगोलीय पिंडों का निर्माण और उनके परस्पर संबंधों के विकास के साथ-साथ अन्य भौतिक प्रक्रियाओं का आविर्भाव हुआ जिससे अन्य भौगोलिक तत्वों का विकास संभव हो पाया। भौगोलिक तत्वों में उनकी शक्तियां समाहित रहती हैं जो अपने आसपास के अन्य तत्वों को भी प्रभावित करती हैं। पृथ्वी तल पर स्थित जड़ और चेतन पदार्थों पर इसकी महत्वपूर्ण प्रतिक्रिया प्रदर्शित होती है।

**शब्द कुंजी–** सृष्टि, पृथ्वी, प्राकृतिक तत्व, पर्यावरण।

**प्रस्तावना –** सृष्टि की निर्माण श्रृंखला में पृथ्वी और जीवों में मनुष्य अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। प्राकृतिक तत्वों का जितना प्रभाव मनुष्य ने अनुभव किया है उतना ही प्रभाव पृथ्वी तल पर स्थित अन्य भौतिक तत्वों पर भी परिलक्षित होता है।

प्राकृतिक तत्व सदैव से ही प्रभावी भूमिका में रहे हैं। उनके प्रभाव से उनके स्वयं के अंतर्गत परिवर्तन तो होते ही हैं, वे मानवीय क्रियाकलापों को भी बहुत गहरे तक प्रभावित करते हैं। प्राकृतिक तत्वों का यह प्रभावी घेरा ही पर्यावरण है जो अपने प्रभाव के कारण उसके प्रति प्रक्रिया स्वरूप मानवीय ज्ञान परंपरा का अंग बन गया है।

मानव जीवन में प्रकृति सदैव महत्वपूर्ण भूमिका में रही है। उसने अपनी भौतिक और सांस्कृतिक उन्नति के लिए संसाधानों का दोहन इसी प्रकृति से किया है। अपने वैज्ञानिक विकास के लिए उसने प्राकृतिक तत्वों को ही आधार बनाया है और प्राकृतिक प्रक्रियाओं से अपने सिद्धांतों को विकसित किया है। उसने प्रकृति को प्रभावित भी किया है और प्रभावित हुआ भी है जो उसके के लिए प्रतिक्रिया स्वरूप रचे गए विवरण में स्पष्टत: प्रतिबिंबित है। मानव सभ्यता का विकास सिंधु सभ्यता से माना जाता है। सिंधु सभ्यता के साथ-साथ पृथ्वी पर अनेक स्थानों पर मानव सभ्यताओं का जन्म हुआ। उन सब में भारत में सिंधु सभ्यता जो ईसा से लगभग 4000 वर्ष पूर्व विकसित अवस्था में आ चुकी थी में प्राकृतिक तत्वों के साथ मानवीय संबंधों और उनके प्रभावों का सम्यक् विवरण वैदिक बाङ्मय और इसके पश्चातवर्ती साहित्य में समाहित है।

**अध्ययन स्रोत –** भारतीय ज्ञान परंपरा का आधार वेद हैं। अन्य ग्रंथ यथा- संहिता, उपनिषद, श्रुति और स्मृति ग्रंथ, महाकाव्य, पुराण, जैन एवं बौद्ध ग्रंथ आदि वैदिक ज्ञान की व्याख्या और उसके विस्तार के रूप में ही देखे जाते हैं।

भारतीय ज्ञान परंपरा में भौगोलिक तथ्य या पर्यावरणीय अध्ययन का क्रमबद्ध विवरण किसी एक ग्रंथ में क्रमबद्ध रूप में समाहित नहीं है। यह विवरण अलग-अलग ग्रन्थों में संदर्भानुसार वर्णित है। अत: प्रस्तुत विषय के तथ्यों को भी भारतीय ज्ञान परंपरा के आधार इन्हीं ग्रंथों के विवरणों से लिया गया है।

**अध्ययन का उद्देश्य –** भारतीय ज्ञान की परंपरा अत्यंत विस्तृत है। अपने विस्तार में इस परंपरा में ज्ञान के प्रत्येक क्षेत्र में गहन अन्वेषण किए गए हैं। भारतीय ऋषियों ने अपने इस ज्ञान को सामयिक ग्रन्थों में स्थान दिया है। विभिन्न प्राचीन ग्रंथो में वर्णित विषयानुरूप निम्नांकित तथ्यों का विश्लेषण प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य है :

1. भारतीय ज्ञान परंपरा में भौगोलिक तत्वों के विवरण का अध्ययन करना है।
2. प्राचीन भारतीय साहित्य में पर्यावरण के विभिन्न तत्वों के स्वरूप की खोज करना है।
3. तथा प्राचीन भारत में पर्यावरणीय तत्वों की महत्ता जानना इस अध्ययन के उद्देश्यों में सम्मिलित है।

प्राचीन भारतीय साहित्य में मनुष्य को सर्वाधिक प्रभावित करने तथा उसके भौतिक और सांस्कृतिक विकास के लिए अपनी प्रक्रियाओं के माध्यम से अनुभव या ज्ञान तथा संसाधन प्रदान करने की परंपरा में उल्लेखित प्रभावों का विवरण संजोया गया है। भूगोल में पर्यावरण एक विस्तृत विषय है जिसमें धरातल के भौतिक एवं सांस्कृतिक तत्वों का समावेश होता है। यह प्रभाव का अदृश्य घेरा जन-जीवन को विशिष्टताओं के साथ प्रभावित करता है। मानव अपने जीवन में जिन तत्वों से प्रभावित होता है उन्हें वह कभी नहीं भूलता और जहां भी वह महत्वपूर्ण तथ्यों का उल्लेख करता है तो ऐसी तथ्यात्मक शक्तियों का उल्लेख करना कभी नहीं भूलता। मानव जीवन को प्रभावित करने वाले कुछ तथ्यों का विवरण यहां समीचीन होगा।

**पुरुष और प्रकृति –** पर्यावरण का आधार वैश्विक सृष्टि ही है जिसमें विभिन्न तत्वों का संयोजन और वियोजन नवीन आकारों और परिस्थितियों को जन्म देता है। अत: सृष्टि के निर्माण की प्रक्रिया में आवश्यक तत्वों के रूप में पर्यावरण के विभिन्न घटक कार्य करते हैं।

भारतीय ज्ञान परंपरा में ज्ञान की प्राप्ति हेतु षड् दर्शन की व्यवस्था है।

इन दर्शनों में सांख्य दर्शन सबसे प्राचीन है। इस दर्शन के अनुसार सृष्टि की उत्पत्ति चेतन स्वरूप पुरुष और जड़ स्वरूप प्रकृति से हुई है। सृष्टि के प्रारंभ में यह जगत अदृश्य रूप में विद्यमान था। उस समय की स्थिति को प्रकृति कहा जाता है। परमाणुवाद से आगे सृजन की रूपरेखा के रूप में महर्षि कपिल ने प्रकृति का प्रतिपादन किया है। सृष्टि में प्रकृति और पुरुष दो अनादि तत्व हैं। प्रकृति त्रिगुणमयी है। प्रकृति के इन तीन गुणों को हम सत्, राज और तम के रूप में जानते हैं। प्रकृति के इन तीनों गुणों की साम्यावस्था में यह जगत अगोचर रहता है। प्रकृति अचेतन होने के कारण निर्माण नहीं कर सकती। अत: सृष्टि की उत्पत्ति के लिए चेतन तत्व की आवश्यकता है। यह चेतन तत्व ही पुरुष है। इसकी उपस्थिति में ही सृजन की प्रक्रिया को आयाम मिलता है।

**सृष्टि के आधार पंच महाभूत –** सृष्टि के रचना संसार में पदार्थ का बहुत बड़ा योगदान है। वर्तमान विज्ञान में ब्रह्मांड की रचना में जिन प्रक्रियायों का शोधा किया गया है उन सब में आद्य तत्व परम आवश्यक है। पृथ्वी या ब्रह्मांड की उत्पत्ति के संदर्भ में आदि तत्व को पूर्व में ही उपस्थित मानकर सारे सिद्धांत रचे गए हैं। आदि तत्व की उत्पत्ति सांख्य दर्शन में प्रतिपादित की गई है। चेतन तत्व पुरुष की उपस्थिति में प्रकृति के त्रिगुणों में क्रिया और प्रतिक्रिया होने पर यह जगत दृष्टिगोचर होने लगता है क्योंकि यह सूक्ष्म से स्थूल की और जाने की प्रक्रिया है। प्रकृति से सर्वप्रथम बुद्धि, बुद्धि से अहंकार, अहंकार से ज्ञानेंद्रियां, कर्मेंद्रियां और अंत में तन्मात्राओं से पंचमहाभूतों यथा जल, अग्नि, वायु, आकाश और पृथ्वी की सृष्टि हुई। यह सभी तत्व मिलकर पर्यावरणीय प्रभाव की रचना करते हैं।

**सप्तद्वीप विवरण –** भारत की भौगोलिक स्थिति के विवरण में पृथ्वी की धरातलीय स्थिति के वर्णन में सप्तदीपों की संकल्पना का विवरण प्राचीन भारतीय साहित्य में मिलता है। इसमें समस्त द्वीपों के मध्य स्थित जम्बूद्वीप का वर्णन अनेक स्थानों पर आता है। भारतवर्ष जम्बूद्वीप के नौ अन्य खंडों में से प्रधान खंड है। इन्द्रद्वीप, कसेरु, ताम्रपर्ण, गभस्तिमान, नागद्वीप, सौम्य, गंधर्व और वारुण तथा यह समुद्र से घिरा हुआ भारतवर्ष उनमें नौवां है।

**'जम्बूद्वीप: समस्तानामेतेषां मधय संस्थित:,**
**भारतम् प्रथम वर्षम् तत: किंपुरुषं स्मृतम् ।।' तथा**
**'कुक्षौ तु सागरा: सर्वे सप्तद्वीपा वसुन्धरा ।।'**

प्राचीन काल में अफ्रीका तथा भारतीय दक्षिणी भाग समुद्र के विस्तार में समाहित थे। अत: मानव सभ्यता ने समुद्र से दूर नदियों के किनारे उपजाऊ भागों को अपना आश्रय स्थल बनाया।

विष्णु पुराण में वसुधा पर सात द्वीपों का उल्लेख किया गया है।

**'जम्बू-प्लक्षह्वयो द्वीपौ शाल्मलिशचापरो द्विज।**
**कुश: क्रौञ्चस्तथा शाक: पुष्करश्चैव सप्तम: ।।'**

यहां जम्बू, प्लक्ष, शाल्मलि, कुश,क्रौञ्च, शाक तथा पुष्कर नामक द्वीप सात समुद्रों से आवृत बताए गए हैं।

**पर्वत और नदियां –** भारतीय जीवन दर्शन में प्रकृति का बहुत महत्व है। प्रकृति के विभिन्न स्वरूपों में मनुष्य ने अपना शारीरिक और मानसिक विकास के साथ-साथ आध्यात्मिक विकास को भी प्राप्त किया है। प्रकृति के इन स्वरूपों में सर्वाधिक प्रभावशाली भू आकारों में पर्वतों का उल्लेख किया जाता है।

भारत के दस महत्वपूर्ण पवित्र पर्वतों का उल्लेख महाभारत के भीष्म पर्व में किया गया है। भारत में यहां पर सात पर्वत कुल बताए गए हैं।

**'महेन्द्रो मलय: सह्य: शुक्तिमानृक्षपर्वत:, विंध्यश्च पारियात्रश्च सप्तैते कुलपर्वता: ।।''** विष्णु पुराण

समुद्र के उत्तर तथा हिमालय के दक्षिण में भारतवर्ष स्थित है। इसका विस्तार 9 हजार योजन है। यह स्वर्ग और अपवर्ग प्राप्त कराने वाली भूमि है तथा इसमें कुल सात पर्वत श्रेणियों हैं – महेन्द्र, मलय, सह्य, शुक्तिमान, ऋक्ष, विंध्य और पारियात्र (हिन्दूकुश या अरावली)।

पौराणिक उल्लेख के अनुसार भगवान शंकर का निवास स्थान हिमालय में स्थित कैलाश पर्वत है और भारत के दक्षिण में स्थित महेंद्र पर्वत भगवान परशुराम का निवास स्थान है।

वैदिक ज्ञान परंपरा तथा अन्य प्राचीन साहित्य में पर्यावरण के महत्वपूर्ण तथ्यों यथा पर्वत और नदियों का उल्लेख आता है। ऋषियों ने अपनी विभिन्न स्तुतियों में जीवन प्रदाता नदियों और पर्वतों की स्तुति के अनेक मंत्र रचे हैं। इसका महत्व तो तब और बढ़ जाता है जब हम देखते हैं कि ऋग्वेद के दसवें मंडल का 75 वां सूक्त नदियों को समर्पित होकर 'नदी सूक्त' कहलाता है।

'ह्नलठ मं मेट गङ्गे यमुने सरस्वतिठ शुतुट षय्ठ
स्तोमंट सचताठ ळ×ठ ष्ण्या । अठ षश्रठ वन्या मट
रुद्धृधे विठ तस्तठ यार्जीट कीये शृणुठ ह्या सुठ
षोमटया'

ऋग्वेद के तीसरे मंडल के सूक्त 23 के चौथे मंत्र में अग्नि देव से प्रार्थना करते हुए कहते हैं कि इला रूपी पृथ्वी के उत्क्रमण उत्कृष्ट स्थान में उत्तम दिन के श्रेष्ठतम समय में आपको हम स्थापित करते हैं आप दृषद्वती (इस समय की घग्गर नदी), आपया(कुरुक्षेत्र में स्थित नदी) और सरस्वती के तत्वों पर रहने वाले मनुष्य के घरों को ऐश्वर्या युक्त बनाएं।

ऋग्वेद के तीसरे मंडल के सूक्त 34 मंत्र 1-13 नदियों के महत्व को समर्पित है।

**अच्छा सिन्धुं मातृतमामयासं विपाशमुर्वीं सुभगामगन्म।**
**वत्समिव मातरा संरिहाणे समानं योनिमनु सञ्चरन्ती।।**

ऋषि विश्वामित्र कहते हैं कि हम स्नेहासिक्त शुतुद्रि(सतलज) नदी के पास गए और विपुल ऐश्वर्य –राशि से संपन्न विपाशा नदी के पास गए। बछड़े के प्रति स्नेह विलासिनी गौओं के समान यह नदियां एक ही लक्ष्य स्थान समुद्र की और सतत बहती हुई जा रही है।

**प्राकृतिक वनस्पति –** भारतीय संस्कृति में जीवन को प्रकृति की गोद में पुष्पित पल्लवित होता हुआ अनुभव किया गया है। इस संस्कृति को अरण्य संस्कृति भी कहा जाता है। अरण्य अर्थात वन। महान ऋषियों ने अपने गंभीर चिंतन को वनों की गोद में रहकर प्राप्त किया और जन सामान्य को उपलब्ध करवाया जिस साहित्य को आज आरण्यक कहा जाता है। अत: प्राचीन भारतीय ज्ञान परंपरा में वनस्पतियों का औषधियों के रूप में वर्णन आता है। इन औषधीय से अपनी जीवन रक्षा के लिए मनुष्य ने उनकी स्तुति की है।

वेदों में वृक्षों को पृथ्वी की संतान कहकर अत्यधिक सम्मान और महत्व देकर लोकोपकारी बताया गया है।

श्रीमद् भागवत गीता में भगवान कृष्ण कहते हैं कि 'अश्वत्थ: सर्ववृक्षाणां।' अर्थात मैं ही औषधि हूं तथा वृक्षों में पीपल मैं ही हूं।

पद्म पुराण में पीपल की महिमा का उल्लेख करते हुए कहा गया है कि इसके मूल भगवान विष्णु, मध्य शंकर तथा अग्र भाग ब्रह्मा के रूप में पूजनीय है।

यस्य मूलो स्थितो विष्णुर्मध्येतिष्ठति शंकर: अग्रभागे स्थितो ब्रह्मा कस्त जगति नार्चयेत्।।

महाभारत का भीष्म पर्व में भी 'सर्व काम फला: वृक्षा:' कहकर वृक्षों को सर्वहित साधान माना गया है।

भारतीय संस्कृति में वृक्षों में देवताओं का निवास माना गया है। अत: ऐसे वृक्षों को उपवन में लगाने का निर्देश किया है जिन्हें हम देव वृक्ष कहते हैं।

**'अशोक चम्पकारिष्ट पुन्नागाश्च प्रियंगव।**
**शिरीषोदुम्बरा: श्रेष्ठा: पारिजातक मेव च।।'**

वराह मिहिर, कश्यप संहिता तथा विश्वकर्मा प्रकाश आदि ग्रन्थों में अशोक, चंपा, अरिष्ट, पुन्नाग, शिरीष, उदुम्बर तथा पारिजात आदि वृक्षों को शुभ माना गया है।

**ऋतु परिवर्तन –** मानव जीवन को सर्वाधिक प्रभावित करने वाला तत्व ऋतु परिवर्तन है। अपने अक्ष पर झुकी हुई पृथ्वी सौरमंडल के मध्य में स्थित सूर्य की परिक्रमा कर रही है। इस परिक्रमा पथ पर चलते हुए पृथ्वी 365 दिन में अपनी यात्रा पूर्ण करती है। इस पृथ्वी की वार्षिक गति कहा जाता है। इस गति के कारण पृथ्वी पर सूर्य की किरणों का स्थानिक वितरण तथा सापेक्ष तिरछापन बदलता है। इसके परिणाम स्वरूप मौसम संबंधित तत्वों में परिवर्तन होता है जिसे हम ऋतु परिवर्तन के रूप में अनुभव करते हैं।

ऋग्वेद में सर्वप्रथम ऋतुओं का उल्लेख किया गया है। ऋग्वेद में पांच ऋतुओं का ही उल्लेख है। किस ग्रंथ में हेमंत तथा शिशिर ऋतु को एक ही मानकर गणना की गई है।

अन्य भारतीय ग्रंथों में छ: ऋतुओं बसंत, ग्रीष्म, वर्षा, शरद, हेमंत तथा शिशिर का उल्लेख मिलता है। वायु पुराण, स्कंद पुराण तथा भागवत पुराण में जलवायु के तत्वों का विवरण मिलता है। यजुर्वेद में ऋतुओं का विवरण इस प्रकार दिया गया है –

मधु माधव वासिन्तावृतू। (13-25) शुक्रशुचि ग्रैष्मावृतू। (14-6) नभऋतु नभस्य वार्षिकावृ तू। (14-15) इषोज शारदावृ तू। (14-16) सह सहस्य हेमिन्तकावृ तू। (14-27) तपतपस्य शैशिरावृ तू। (15-27)

बाल्मीकि रामायण और महाभारत काव्य में ऋतुओं के प्रभाव का मानवीय जीवन पर गहरा प्रभाव होता है ऐसा उल्लेख पाया जाता है।

**वर्षा –** भारतीय ज्ञान परंपरा में ऐश्वर्य के देवता इंद्र से पर्जन्य के माध्यम से वर्षा करने के लिए स्तुति की गई है।

प्रकृति में मेघों से जल प्राप्ति यज्ञाग्नि से उत्पन्न शक्तिशाली ऊर्जा धाराएं बलशाली मरुद्गणों के साथ मिलकर पृषती (वायु को वाहन बनाने वाले मेघों) को एकत्रित करें। सर्वज्ञाता, आदमी मरुद्गण जल युक्त पर्वताकार मेघों को कंपित करते हैं। (ऋग्वेद मंडल 3 सूक्त 26 मंत्र 4 )

**सूर्य शक्ति –** वैदिक ऋषि सूर्य को इस सृष्टि का आधार मानते हैं, इसलिए सूर्य को उन्होंने सविता कहा है जिसका अर्थ जन्म देने वाला होता है। इसी प्रकार ऋषि इंद्रदेव से प्रार्थना करते हैं कि जिस प्रकार सूर्य शक्ति के द्वारा अपार वैभव से संपन्न महिमामंडित दिन और रात्रि एक दूसरे का अनुगमन करते हुए निरंतर गतिशील है उसी प्रकार सुगम मार्गों से निरंतर प्रवाहित होने वाले मित्र और मरुद् देव शत्रुओं का विनाश करने का संपूर्ण बल आपसे ही प्राप्त करते हैं।

'आ कृठ ष्णेनठ क्षींट श्रज्ञठ वर्तट मानो निवेठ
शयटर्णीठमृतंठ मर्त्यंट च। हिठ रठ ण्ययेट न सविठ
ता रथेठ ना देठ वो याट षीठ भुवट नानिठ पश्यट
न् श'(ऋग्वेद मंडल 3 सूक्त 31)

**निष्कर्ष –** प्राचीन भारतीय ज्ञान परंपरा में भौतिक प्रकृति के तत्वों को अनेक प्रकार से वर्णित किया है। प्रकृति के यह तत्व पर्यावरण की रचना करके मानव जीवन को प्रभावित करते हैं। अतएव प्राकृतिक तत्वों में निहित शक्तियों से लोक कल्याण के लिए मंत्रों के माध्यम से स्तुति की गई है। प्राचीन भारतीय परंपरा एक समृद्ध परंपरा है जिसमें प्रकृति के तत्वों की शक्तियों को पर्यावरण के लिए परिवर्तनकारी माना गया है। प्रकृति के ये परिवर्तन मनीषियों ने अपने अनुभवों और अंतर्दृष्टि से जन सामान्य के लिए उपलब्धा कराए हैं जो आज भी प्रासंगिक है।

**संदर्भ ग्रंथ सूची :-**

1. शर्मा, श्रीराम, ऋग्वेद संहिता भाग 1-10, ब्रह्मवर्चस, शांतिकुंज, हरिद्धार 2001
2. शर्मा, श्रीराम, अथर्ववेद संहिता भाग 1, ब्रह्मवर्चस, शांतिकुंज, हरिद्धार 2001
3. शर्मा, श्रीराम, कर्मकाण्ड भास्कर, ब्रह्मवर्चस, शांतिकुंज, हरिद्धार 2001
3. विष्णु पुराण, गीता प्रेस गोरखपुर
4. पद्म पुराण, गीता प्रेस गोरखपुर
5. वायु पुराण, गीता प्रेस गोरखपुर
6. स्कंद पुराण, गीता प्रेस गोरखपुर
7. महाभारत, भीष्म पर्व, गीता प्रेस गोरखपुर
8. www.civilnotes.in

**********